18 stories of women's self-reliance through cow dung initiatives (2024-2025)

इस रिपोर्ट में वर्ष **2024 से 2025 के बीच 18 महिला या महिला समूहों** द्वारा गाय के गोबर आधारित स्वयं सहायता समूह व्यवसायों में बढ़ती भागीदारी और उनके आत्मनिर्भर बनने की दिशा में किए गए प्रयासों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद की **शालिनी यादव ने 5 अक्टूबर 2025** को एक साक्षात्कार में बताया कि उनके नेतृत्व में कार्यरत "स्वयं सहायता समूह" की **10 महिलाएँ** गाय के **गोबर से लक्ष्मी-गणेश** की पर्यावरण अनुकूल मूर्तियाँ तैयार कर रही हैं। इस कार्य से प्रत्येक महिला **8,000 से 10,000** रुपये की मासिक आय अर्जित कर आत्मनिर्भरता और पर्यावरण संरक्षण का उदाहरण स्थापित कर रही है।

क्रमांक	दिनांक / विवरण	चित्र / स्रोत
1)	**महिलाओं की बनाई गोबर की मूर्तियों ने दिवाली बाजार में मचाई धूम** **दिनांक(वर्ष)** : 05 अक्टूबर 2025 **नाम** : शालिनी यादव **स्थान** : मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश **विवरण** : मुरादाबाद की शालिनी यादव के नेतृत्व में 10 महिलाओं के "**स्वयं सहायता समूह"** ने गाय के गोबर से लक्ष्मी-गणेश की पर्यावरण अनुकूल मूर्तियाँ बनाकर दिवाली बाजार में अपनी विशेष पहचान बनाई है। गोबर एकत्र करने, उसे छानने, गूँथने और साँचों की सहायता से प्रतिमाएँ तैयार करने तक का पूरा कार्य महिलाएँ स्वयं करती हैं। इन मूर्तियों की बिक्री न केवल मुरादाबाद मंडल में, बल्कि उत्तराखंड के उधम सिंह नगर और काशीपुर तक हो रही है। इस उद्यम से समूह की **प्रत्येक महिला 8,000 से 10,000 रुपये** मासिक आय अर्जित कर रही है, जिससे वे आत्मनिर्भरता और पर्यावरण संरक्षण दोनों की मिसाल पेश कर रही है।	 News18
2)	**मुरादाबाद की महिलाओं ने गोबर के दीयों से बढ़ाई आत्मनिर्भरता** **दिनांक(वर्ष)**: 30 सितंबर, 2025 **नाम**: पूजा यादव **स्थान (निवासी)**: मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश **विवरण** : मुरादाबाद के **'शुभ स्वयं सहायता समूह'** की अध्यक्ष **पूजा यादव** के नेतृत्व में 12 महिलाओं ने गाय के गोबर से रंग-बिरंगे और अलग-अलग डिज़ाइन के दीये बनाकर स्थानीय बाजार में अपनी पहचान बनाई है। समूह गोशाला से कंडे खरीदकर उन्हें छानता है और गोबर से दीयों का निर्माण करता है। प्रत्येक महिला प्रतिदिन लगभग 500 दीये तैयार करती है, जिससे उन्हें प्रतिदिन 300–400 रुपये और **महीने में 10,000-12,000 रुपये** तक की आय होती है। इस पहल से महिलाएं आर्थिक रूप से सशक्त बन रही है।	 News18

3)	**महिलाओं ने गोबर से बनाई घड़ी, बढ़ रही डिमांड और आमदनी** **दिनांक(वर्ष) :** 23 सितम्बर, 2025 **नाम :** अंशिका स्वयं सहायता समूह **स्थान :** मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश **विवरण :** मुरादाबाद में **"अंशिका स्वयं सहायता समूह"** की 10 महिलाओं ने गाय के गोबर से अभिनव उत्पाद बनाकर आत्मनिर्भरता की नई मिसाल पेश की है। समूह की चार महिलाएँ गोबर से पूरी तरह जैविक और पर्यावरण अनुकूल वस्तुएँ, जैसे दीवार घड़ियाँ, लक्ष्मी-गणेश की मूर्तियाँ और अन्य सजावटी उत्पाद, तैयार कर रही हैं। गाय के गोबर से उत्पाद बनाने की इस पहल ने न केवल पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा दिया है, बल्कि गोवंश को उपयोगी बनाकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी सशक्त किया है। इन उत्पादों की माँग मुरादाबाद के साथ-साथ आसपास के जिलों तक पहुँच रही है। समूह की प्रत्येक महिला **प्रति माह 8,000 से 10,000 रुपये** तक की आमदनी कमा रही है, जिससे वे आर्थिक रूप से सशक्त और आत्मनिर्भर बन रही हैं।	 News18
4)	**गाय के गोबर से बनी प्रतिमाओं ने संभल में रचा नया इतिहास** **दिनांक(वर्ष) :** 24 अगस्त, 2025 **नाम :** अनुपमा सिंह **स्थान :** संभल, उत्तर प्रदेश **विवरण :** संभल के ग्राम बनियाखेड़ा में **"द्वारकाधीश संकुल स्तरीय समिति"** की अध्यक्ष अनुपमा सिंह के नेतृत्व में **60 महिलाओं** ने पाँच से सत्रह इंच तक की गणेश और दुर्गा जी की प्रतिमाएँ गाय के गोबर और प्राकृतिक रंगों से बनाकर आत्मनिर्भरता की नई मिसाल पेश की है। समिति की महिलाएँ गोबर से पूरी तरह जैविक और पर्यावरण अनुकूल उत्पाद, जैसे पूजा की पटली, चौकी, दीवार घड़ियाँ, रेडिएशन चिप्स, मोबाइल स्टैंड और देवी-देवताओं की मूर्तियाँ तैयार कर रही हैं। अब तक समिति की महिलाओं ने **14 लाख रुपये** मूल्य के उत्पाद बेचकर लगभग **6.8 लाख रुपये** की आय अर्जित कर रही है।	 AmarUjala
5)	**महिलाओं ने गोबर से बनाया कमाई का जरिया, घर बैठे कर रही बंपर कमाई** **दिनांक(वर्ष):** 18 अगस्त 2025 **नाम:** दुर्गा स्वयं सहायता समूह **स्थान :** ठाकुरद्वारा, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश **विवरण :** मुरादाबाद के ठाकुरद्वारा में **"दुर्गा स्वयं सहायता समूह"** की 10 महिलाओं ने गाय के गोबर से अभिनव उत्पाद बनाकर आत्मनिर्भरता की नई मिसाल पेश की है। समूह की महिलाएँ गोबर से पूरी तरह जैविक और पर्यावरण अनुकूल वस्तुएँ, जैसे संभरानी कप, पूजा सामग्री, दीवार घड़ियाँ और अन्य सजावटी उत्पाद तैयार कर रही हैं। गोबर से उत्पाद बनाने की इस पहल ने गोवंश को उपयोगी बनाकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी सशक्त किया है। इन उत्पादों की माँग मुरादाबाद के साथ-साथ आसपास के जिलों तक पहुँच रही है। समूह की प्रत्येक महिला **प्रति माह 5,000 रुपये** तक की आमदनी कमा रही है, जिससे वे आर्थिक रूप से सशक्त और आत्मनिर्भर बन रही हैं।	 News18

6)	**महिलाओं ने गोबर से बनी पारंपरिक और आधुनिक राखियों से बनाई नई पहचान** **दिनांक(वर्ष):** 28 जुलाई 2025 **नाम:** रेखा **स्थान (निवासी):** उन्नाव, उत्तर प्रदेश **विवरण :** बिछिया ब्लॉक की रेखा के नेतृत्व में स्वयं सहायता समूह की 15 महिलाएँ गोबर से बनी पारंपरिक और आधुनिक राखियाँ तैयार कर बाजार में अपनी नई पहचान बना रही हैं। समूह की प्रत्येक महिला राखी के सीजन में **10,000 से 25,000 रुपये** तक की कमाई कर रही है। तीन साल पहले दही चौकी में एक छोटे प्रयास के रूप में शुरू हुआ यह क्लस्टर आज हजारों राखियों का उत्पादन कर रहा है।	 Etvbharat
7)	**महिलाओं ने गोबर से मूर्तियाँ बनाकर स्वरोजगार से कमाई बढ़ाई** **दिनांक(वर्ष) :** 30 मई 2025 **नाम :** प्रसून लता **स्थान :** काशीपुर, उत्तराखंड **विवरण :** काशीपुर में समूह की संचालक प्रसून लता ने बताया कि **"मां गायत्री महिला स्वयं सहायता समूह"** की महिलाएँ गोबर से मूर्तियाँ और घरों में साज-सज्जा के लिए विभिन्न उत्पाद तैयार कर घर बैठे रोजगार अर्जित कर आत्मनिर्भर बन रही हैं। समूह की महिलाएँ चैती मेला, दीपावली, दशहरा और अन्य त्योहारों के अवसरों पर इन मूर्तियों और उत्पादों की बिक्री कर रही हैं। सीजन में प्रत्येक महिला **10,000 से 15,000 रुपये** तक की आमदनी कमा रही है। इन उत्पादों की मांग घरों से लेकर आसपास के इलाकों तक पहुँच रही है, जिससे महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण और स्वरोजगार दोनों मजबूत हुए है।	 AmarUjala
8)	**आशा देवी की गोबर से बनी धूपबत्तियों ने बदल दी आर्थिक दिशा** **दिनांक(वर्ष):** 25 मार्च 2025 **नाम:** आशा देवी **स्थान :** सितारगंज, उत्तराखंड **विवरण :** सितारगंज के **"नया सवेरा क्लस्टर"** से जुड़ी आशा देवी ने गाय के गोबर से धूपबत्तियाँ बनाकर प्रतिमाह 18,000 से 20,000 रुपये तक की आमदनी कमा रही हैं। समूह की 10 महिलाएँ मिलकर घरों और समूह की यूनिट में प्रतिमाह 15 से 20 किलो धूपबत्तियाँ तैयार करती हैं। 250 ग्राम की प्रत्येक धूपबत्ती की कीमत 100 रुपये है, जो बाजार में मिलने वाले समान उत्पादों से **25–40 रुपये** कम है। ये प्रमुख उत्पाद सरस मेले और तीर्थ स्थलों पर भी बेचे जाते है।	 AmarUjala
9)	**अमेठी की महिलाओं ने गोबर से बनाया ऑर्गेनिक गुलाल** **दिनांक(वर्ष):** 10 मार्च 2025 **नाम:** रामादेवी **स्थान (निवासी):** अमेठी, उत्तर प्रदेश **विवरण :** अमेठी की रामादेवी के नेतृत्व में **"स्वामी महिला स्वयं सहायता समूह"** की महिलाएं गोबर से पूरी तरह ऑर्गेनिक गुलाल तैयार कर आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन रही हैं। समूह की महिलाएं गोबर को पीसकर सुखाती हैं, उसमें राख और अरारोट मिलाकर गुलाल तैयार करती हैं और इससे **प्रतिमाह 10,000 से 15,000 रुपये** की आमदनी अर्जित कर रही हैं।	 News18

10)	**गोबर से बने 200 इको-फ्रेंडली उत्पादों से आत्मनिर्भर बनीं जालौन की महिलाएं** **दिनांक(वर्ष):** 2024 **नाम:** विनीता पांडेय **स्थान :** जालौन, उत्तर प्रदेश **विवरण :** विनीता पांडेय के नेतृत्व में जालौन के चमारी गांव की महिलाएं वर्ष 2013 से गाय के **गोबर** और **गोमूत्र** से **इको-फ्रेंडली उत्पादों** का निर्माण कर रही हैं। उनकी संस्था स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देने की दिशा में काम करते हुए राखी सहित लगभग 200 तरह के उत्पाद तैयार करती है। इन उत्पादों से सालाना **20–25 लाख रुपये** की आमदनी हो रही है। ये महिलाएं न केवल स्वयं आत्मनिर्भर बनी हैं, बल्कि दूसरी महिलाओं को भी प्रशिक्षण देकर उन्हें स्वावलंबी बना रही हैं।	 Success Story: गाय के गोबर से सालाना 25 लाख की बचत, जालौन की महिलाएं बना रहीं राखी समेत 200 प्रोडक्ट [KisanTak]
11)	**गोबर ने बदली उत्तराखंड की महिलाओं की किस्मत, बना रही 50 से अधिक उत्पाद** **दिनांक(वर्ष):** 17 नवंबर, 2024 **नाम:** स्वयं सहायता समूह, खिर्सू **स्थान:** पौड़ी, उत्तराखंड **विवरण :** पौड़ी के खिर्सू विकासखंड में, एनआरएलएम और रीप परियोजना के माध्यम से स्वयं सहायता समूह की महिलाओं के लिए गोबर यूनिट स्थापित की गई है। इस यूनिट में महिलाएं गाय के गोबर से 50 से अधिक प्रकार के होम डेकोर और पूजा-सामग्री तैयार कर रही हैं, जिनमें लक्ष्मी, गणेश, भोलेनाथ की मूर्तियाँ, घर के दरवाजे के आकर्षक तोरण, हवन कप, गोबर के दीये और गमले शामिल हैं। महिलाओं ने इन उत्पादों को आकर्षक रंगों से सजाया है। प्रत्येक उत्पाद की कीमत **100 रुपये** से लेकर **4,000 रुपये** तक है। 20 महिलाएं इस यूनिट में प्रतिदिन उत्पादों के निर्माण और सजावट में लगी हुई हैं, जिससे उनकी आर्थिकी सशक्त हो रही है। इस पहल ने महिलाओं को रोजगार और आत्मनिर्भरता प्रदान की है, साथ ही गोबर का सदुपयोग कर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूत किया है।	 गाय के गोबर ने बदली महिलाओं की किस्मत, बना रही 50 से अधिक उत्पाद, बंपर कमा रही मुनाफा [News18]
12)	**सागर की महिलाओं का गोबर आधारित रोजगार और सशक्तिकरण** **दिनांक(वर्ष):** 26 अक्टूबर, 2024 **नाम:** सागर महिला स्वयं सहायता समूह **स्थान :** सागर, मध्य प्रदेश **विवरण :** सागर की महिलाएं **"महिला स्वयं सहायता समूह"** के माध्यम से गोबर से विभिन्न सजावटी और पूजा-सामग्री तैयार कर आत्मनिर्भरता की मिसाल पेश कर रही है। समूह की महिलाएं गोबर से दीवार घड़ियाँ, मूर्तियाँ, दीपक, शुभ-लाभ, श्री यंत्र, मालाएँ और अन्य होम डेकोर आइटम बना रही है। इस पहल से 750 महिलाओं को रोजगार मिला है और उत्पादों की मांग देश के साथ-साथ अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया तक पहुँच रही है। समूह की प्रत्येक **महिला सालाना 80,000 से 1,00,000 रुपये** तक आय अर्जित कर आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त हो रही है।	 विदेशी प्रोडक्ट पर देसी गोबर हावी, अमेरिका से लेकर ऑस्ट्रेलिया तक भारी डिमांड गोबर से जगमग दिवाली [EtvBharat]

13)	**गोबर से बने हर्बल दीयों ने बलरामपुर में दीपावली की रौनक बढ़ाई** **दिनांक(वर्ष):** 10 अक्टूबर, 2024 **नाम:** कनहरा महिला स्वयं सहायता समूह **स्थान:** बलरामपुर, उत्तर प्रदेश **विवरण :** बलरामपुर के कनहरा गांव की महिलाओं ने "**राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन"** (एनआरएलएम) के सहयोग से गाय के गोबर से हर्बल दीपक तैयार कर दीपावली पर घर-आंगन को जगमगाने का काम किया है। तुलसीपुर और आसपास के गांवों की 20 स्वयं सहायता समूह की महिलाएं प्रतिदिन छोटे-बड़े दीपक तैयार कर रही हैं। इन दीपकों की बिक्री सरकारी भवनों, स्टॉल और ऑर्डर के माध्यम से हो रही है। प्रत्येक सेट की **कीमत 40 रुपये** है। इस पहल से महिलाओं को रोजगार मिला है और साथ ही पर्यावरण संरक्षण में भी योगदान हुआ है।	 AmarUjala
14)	**जयपुर की महिलाओं द्वारा तैयार गाय के गोबर के दीपकों ने अमेरिका में दिवाली को रोशन किया** **दिनांक(वर्ष):** 22 अक्टूबर, 2024 **नाम:** पिंजरापोल महिला स्वयं सहायता समूह **स्थान:** जयपुर, राजस्थान **विवरण :** जयपुर की पिंजरापोल गौशाला के लगभग 2,000 महिलाओं के "**स्वयं सहायता समूह"** ने गाय के गोबर से रंग-बिरंगे और पर्यावरण अनुकूल दीपक बनाकर अंतर्राष्ट्रीय बाजार में अपनी पहचान बनाई है। साल 2024 में अमेरिका से 10 लाख दीपकों का ऑर्डर प्राप्त हुआ है, जो दिवाली पर वहां जलाए जाएंगे। गोबर एकत्र करने, उसे छानने, गूँथने और दीपक का आकार देने का पूरा कार्य महिलाएं स्वयं कर रही है। इस पहल से प्रत्येक महिला आर्थिक रूप से सशक्त हो रही है और स्थानीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय हस्तशिल्प की पहचान स्थापित कर रही है। इसके माध्यम से महिलाओं को रोजगार के साथ-साथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिली है।	 EtvBharat
15)	**महिलाएं गोबर से उत्पाद बनाकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत कर रही है** **दिनांक(वर्ष):** 17 मई 2024 **नाम:** आकांक्षा नामदेव **स्थान :** सागर, मध्य प्रदेश **विवरण :** सागर की आकांक्षा नामदेव के नेतृत्व में 3,000 से अधिक महिलाओं के **"स्वयं सहायता समूह"** ने गाय के गोबर से कलात्मक घड़ियां, मोमेंटो और मालाएँ बनाकर स्वरोजगार एवं आत्मनिर्भरता की नई मिसाल स्थापित की है। महिलाएं घर पर साँचों की मदद से घड़ियां और मोमेंटो बनाकर उन्हें सजाकर बाज़ार और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर बेचती हैं। महिलाएं इस उद्यम से प्रतिमाह औसतन **3,000 से 4,000 रुपये** कमा रही हैं। उनके यह उत्पाद ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से देश-विदेश के बाजारों में भेजे जा रहे हैं। इस पहल ने महिलाओं को आर्थिक सशक्तिकरण के साथ-साथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूती प्रदान की है।	 AmarUjala

16)	**गोबर से गुलाल, पेंट और पुट्टी ग्रामीण महिलाओं का स्वरोजगार मॉडल** **दिनांक(वर्ष):** 18 मार्च 2024 **नाम:** रामरति यादव **स्थान (निवासी):** अमेठी, उत्तर प्रदेश **विवरण** : अमेठी के भादर विकासखंड की रामरति यादव के नेतृत्व में 20 महिलाओं का **"स्वयं सहायता समूह"** सड़क पर घूम रही गायों से गोबर एकत्र करके प्राकृतिक और हर्बल गुलाल तैयार कर रही है। महिलाएँ गोबर को सुखाकर और आग में जलाकर उसकी राख बनाती हैं, फिर हर्बल सामग्री मिलाकर रंग-बिरंगा गुलाल बनाती है। इसके अलावा, महिलाएँ गाय के गोबर से पेंट, पुट्टी और अन्य उत्पाद भी तैयार कर **प्रतिमाह 2,000 से 3,000 रुपये** तक आय अर्जित कर रही है। इस समूह के माध्यम से महिलाएँ गौ सेवा और पर्यावरण संरक्षण में भी योगदान दे रही है।	 News18
17)	**महिलाओं ने गोबर से तैयार किए 50 तरह के उत्पाद, मलेशिया तक पहुंचा उनका स्वरोजगार मॉडल** **दिनांक(वर्ष)** : 15 जनवरी, 2024 **नाम** : तृप्ति थापा **स्थान** : देहरादून, उत्तराखंड **विवरण** : देहरादून की तृप्ति थापा के नेतृत्व में 10–15 महिलाओं का **"स्वदेश कुटुंब स्वयं सहायता समूह"** गाय के गोबर से भगवान की मूर्तियाँ, हर्बल गुलाल, धूप, अगरबत्ती, पेंट, पुट्टी, घंटियां, डोर हैंगिंग, वॉल हैंगिंग समेत 50 तरह के पर्यावरण-अनुकूल और पूजा-सामग्री उत्पाद तैयार कर रही है। स्वदेश कुटुंब स्वयं सहायता समूह ने अपने उत्पाद राज्य और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, मलेशिया तक भेजे है। प्रमुए उत्पादों की कीमतें में अगरबत्ती 40–100 रुपये प्रति पैकेट, यज्ञ कप 70 रुपये, गौमय टिक्की 70 रुपये और गोबर के दीये 3 रुपये से शुरू है। भगवान की मूर्तियाँ 50 रुपये से 1,100 रुपये तक की रेंज में उपलब्ध है। इस पहल के माध्यम से समूह की महिलाएँ **प्रतिमाह 2,000–3,000 रुपये** तक आय अर्जित कर रही है।	 News18
18)	**महिलाओं की बनाई गोबर की मूर्तियों ने राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा में लोगों को मंत्रमुग्ध किया** **दिनांक(वर्ष)** : 22 जनवरी 2024 **नाम** : एकता मेहता **स्थान** : इंदौर, मध्य प्रदेश **विवरण** : इंदौर की **"एकता आत्मनिर्भर भारत स्व-सहायता समूह"** की अध्यक्ष एकता मेहता के नेतृत्व में 10 महिलाओं ने गाय के गोबर से अयोध्या के नवनिर्मित राम मंदिर की प्रतिकृति और राम दरबार की मूर्तियाँ बनाई है। महिलाएँ गोबर को शुद्ध करके, उसमें प्राकृतिक सामग्री मिलाकर मूर्तियाँ, पेन स्टैंड, मोबाइल स्टैंड, बंदनवार, राखियाँ, डिब्बे और अन्य कलात्मक उत्पाद तैयार करती हैं और साल भर में लगभग **एक लाख रुपये** का कारोबार कर रही है।	 TimesNow PrabhatKhabar